आविर्भाव पर्व

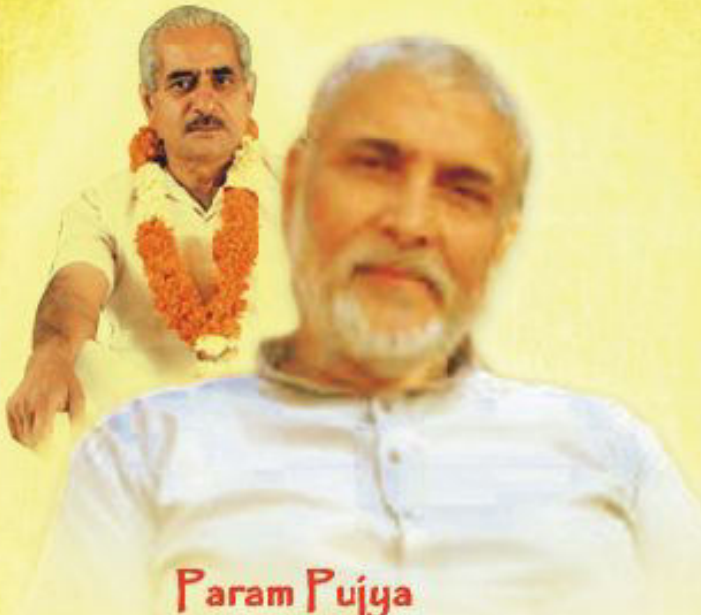

Param Pujya
Guruji

गुरूर्ब्रहमा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः

२९ सितम्बर

ॐ नमोः गुरुदेव

परम पुज्य
दादा गुरूजी

परम पुज्य
दादी माँ

प्रादुर्भाव यज्ञ

ध्यान मूलं गुरूर्मूर्ति । मंत्र मूलं गुरूर्वाक्यम् ॥
पूजा मूलं गुरौपदम् । मोक्ष मूलं गुरौकृपा ॥

प्रादुर्भाव पंचामृत्र

1. प्रकृति को नमन करते हुए उसके तत्वों के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त करना।

2. शरीर के दोषों और व्याधियों से मुक्ति का अनुरोध करना।

3. मन की अस्थिरता के समाधान, उसमें घुमड़ते प्रश्नों के उत्तर, भावनाओं और विचारों के संतुलन के साथ बुद्धि और स्मरणशक्ति तेज करने की विनती।

4. आत्मा की प्रशांत अवस्था, आत्म-साक्षात्कार और शून्य अवस्था की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करना।

5. अब हम गुरू के तत्वों को आत्मसात करने में सक्षम होने और उनका प्रतिबिंब बनने की विनती करें, ताकि हम उनमें एकाकार हो जाने की अवस्था को प्राप्त कर सकें।

यज्ञो हि श्रेष्ठतमं कर्म

मनुष्य जीवन के सर्व-श्रेष्ठ कर्म यज्ञ है। जिस का स्वरूप, विधान और फल सब कुछ हटकर है। इस में भौतिकता से देवत्व की ओर, संग्रह से समर्पण की ओर, भोग से त्याग की ओर, अज्ञान से विज्ञान की ओर, अंधेरे और निराशा से ज्ञान और सुख शान्ति की ओर, स्वार्थ से हटकर प्रकृती के संरक्षण की ओर इस प्रकार यज्ञ सभी के लिये सर्वदा परम उपादेय बना है।

यज्ञ में द्रव्य, देश, काल, मन्त्र, तन्त्र, ऋत्विक्, योग और विधान इन आठों अङ्गों का विशुद्ध एवं उत्तम होना परम आवश्यक है।

पसीने की कमाई को शिव सङ्कल्प से भगवान् को समर्पित कर देना ही यज्ञ में मुख्यतः अपेक्षित है। ऐसे यज्ञ का बोध विधान और परिचय केवल वेद से ही

सम्भव है । वेद ज्ञान के भंडार है, धर्म अधर्म निर्णय में अन्तिम प्रमाण है, और स्वयं नित्य और अपौरुषेय है ।

इष्ट की प्राप्ति एवं अनिष्ट का परिहार के लिये ही सम्पूर्ण मानव जीवन में प्रयास चलता है । अपने भरसक प्रयासों के बाद भी सफलता दीखती नही । उल्टे कष्ट और दुःख असह्य होते हैं । तब ठका - भागा मानव वेद की शरण में आता है । अपनी शरण में आये हुए जीव मात्र को परम दयालू वेद भगवान् उस को यज्ञ रूपी अलौकिक दिव्य साधन देते है । उस यज्ञ के दो मुख्य आधार हैं । पहला मन्त्र एवं विधि जो वेदों से ब्राह्मणों के द्वारा उपलब्ध होता है । और दूसरा घी एवं इन्धन जो की गोमाता से मिलता है । इसलिये सदाचारी विधि विधान के ज्ञाता वेद पाठी ब्राह्मण पण्डित एवं गोमाता यज्ञ के प्रमुख आधार है ।

अतः वेद पाठी ब्राह्मण एवं गोमाता इन दोनों के संरक्षण, संवर्धन, पोषण, गौरव, आश्रय और आधार यही सब यज्ञ के संबल है । यज्ञ का नित्य नैमित्तिक अनुष्ठान सर्वत्र सभी लोग श्रद्धा विश्वास एवं प्रेम भक्ति पूर्वक करने से अवश्य ही सुवृष्टि आदि दैवी अनुग्रह से प्राणिमात्र का जीवन निरामय, दीर्घायु, सुख शान्ति ज्ञान विज्ञान आदि से समृद्ध और कृतकृत्य होगा ।

प्रथम भाग

१) मंगलवाद्य घोष

२) अनुज्ञा

३) शान्ति पाठ

४) गणेश आराधना

५) प्रार्थना सङ्कल्प

६) स्वस्ति वाचन

७) ऋत्विक् वरणम्

८) मधुपर्क

९) स्थल, द्रव्य और आत्म शुद्धि

१०) यज्ञमण्डप प्रवेश

११) सर्वतो भद्राद्रि मण्डप देवता पूजन

१२) कुण्ड संस्कार

१३) अरणि मथनम्

१४) अग्नि प्रतिष्ठा

द्वितीय भाग

१) वन्दनम्	४
२) पवित्रीकरणम्	६
३) आचमनम्	८
४) प्राणायामः	१०
५) सङ्कल्पः	१२-२२
६) रक्षा सूत्र धारणम्	२४
७) अग्नि ध्यानम्	२६
८) अग्नि पूजनम्	२८
९) आदौ गणपति होमः	३०
१०) तत्त्व मन्त्र होमाः	३२-५०
११) प्रायश्चित्त होमः	५२
१२) उत्तराङ्गम् (अनुग्रह भाषण प्रवचन)	५२
१३) पूर्णाहुति वसोर्धारा होमः	५२
१४) गुरु आरति पुष्पाञ्जलि	५३
१५) यज्ञ-मण्डप परिक्रमा	५३
१६) प्रार्थना नमस्कार	५४-५६
१७) प्रस्थान	५८

यज्ञशाला प्रवेशः

१. सभी देवताओंके निवास से परमपुनीत यज्ञशालामे यजमान एवं पण्डित तथा आचार्य परिक्रमा पूजन और प्रणाम कर यज्ञसामग्री के साथ विनम्रता से विशुद्ध अन्तःकरण और पवित्र शरीर से पश्चिमद्वार से प्रवेश करते है ।

अग्निप्रतिष्ठा

२. आचार्य अन्य पण्डितों के साथ पञ्चभूसंस्कार कर अग्निप्रतिष्ठा का उपक्रम करते है ।

॥ ॐ नमोश्वि ॐ ॐ नमो गुरुदेव ॥

-: वन्दनम् :-

गणनाथः सरस्वती रविः शुक्रो बृहस्पतिः ।
पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं सर्वकार्य सुसिद्धये ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चरारम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
श्री सद्गुरु चरणारविन्दाभ्यां नमः ।

-: वन्दन :-

वन्दन अर्थात् नमस्कार करना, गुरूजी की सेवा और देवता, श्रेष्ठ पुरुषों की नित्य वन्दना मनुष्य के आयु, विद्या, यश और बल को बढाती है । वन्दना एक भक्ति भी है । अक्रूर वन्दना भक्ति के आदर्श है । माता-पिता-गुरु और देवता की वन्दना सरलता को बढाती है ।

–: पवित्रीकरणम् :–

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरश्शुचिः ॥

पुण्डरीकाक्षः पुनातु । (त्रिवारम्)

–: पवित्रीकरणम् :–

अपने शरीर – यज्ञशाला – यज्ञसामग्री आदि सभी को यज्ञ के योग्य बनाने हेतु कलश के जलमे गङ्गा आदि पवित्रनदियों का एवं जल देवता वरुण जी का आवाहन पूजन कर पवित्र हुए जलसे सभी के ऊपर प्रोक्षण (छींटे देना) करने को पवित्रीकरण कहते है ।

–: आचमनम् :–

अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः ।
विष्णवे नमः (हस्तं प्रक्षाल्य)

–: आचमनम् :–

अपने शरीर की अन्तःशुद्धि एवं आरोग्यवृद्धि हेतु पवित्र जल को मन्त्र पढते हुए तीन बार पीने को आचमन कहते है ।

-: प्राणायामः :-

नमो भगवते तुभ्यं	वासुदेवाय धीमहि ।
प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय	नमः सङ्कर्षणाय च ॥

-: प्राणायाम :-

अन्तः शरीर के सप्त धातुओं की शुद्धि मन की एकाग्रता एवं उत्तमप्रकार से रक्तसंचार हो इसलिये पूरक-कुम्भक-रेचक इन तीन क्रियाओंको मिलाकर प्राणायाम होता है । ऐसे तीन प्राणायाम यज्ञ के आरम्भ में मन्त्र पढकर करने से विशेष लाभ होता है ।

-: सङ्कल्पम् :-

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

-: सङ्कल्प :-

सर्वव्यापी भगवान् विष्णु श्वेतवस्त्र धारण किये हुए है । चार भुजा वाले स्वच्छ - दिव्य आह्लादक कान्तियुक्त प्रसन्न मुख भगवान् का सभी विघ्नों के निवारण हेतु ध्यान करना चाहिये ।

मनसे हुआ कर्म ही सङ्कल्प है । सङ्कल्प का स्वरूप एवं विधि दोनों ही महत्त्वपूर्ण और परमावश्यक है, सङ्कल्प में स्पष्टता, भावशुद्धि एवं पूर्ण श्रद्धा ही यज्ञ को सफल बनाते है ।

अच्छे सङ्कल्प में भगवान् और महाकाल का स्मरण यज्ञ-भूमि एवं यज्ञ काल का सम्पूर्ण विवरण उसके बाद किन की किस कामना पूर्ती के लिये यज्ञ होगा उसका स्मरण और अन्त में यज्ञ के विधान एवं स्वरूप का स्मरण करते हुए हम भगवान् की और सद्गुरु देव की प्रसन्नता से कामना पूर्ति अर्थात् यज्ञ की सफलता का विश्वास धारण करना ही उत्तम शिव सङ्कल्प कहलायेगा ।

श्री मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीय परार्धे, श्वेतवराह कल्पे, वैवस्वत-मन्वन्तरे, कलियुगे, प्रथम पादे,

सत्त्वगुण से पूर्ण सर्वव्यापी श्री भगवान महा विष्णु (शिष्यानुग्रह-तत्पर श्री सद्गुरु देव) जी की आज्ञा से अनादि काल से चल रहे महाकालचक्र में, अभी सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी की आयु के उत्तरार्ध में श्वेतवराहकल्प में वैवस्वत मनु के शासन काल में अट्ठाईसवे कलियुगके पहले पाद में (यज्ञ होगा)

जम्बूद्वीपे, भरतवर्षे, भरतखण्डे, मेरोर्दक्षिणे, महाराष्ट्र प्रान्ते, पवनातीरे, सह्याद्रि-शिखरे, हिमगिरि-आध्यात्मिक केन्द्रे, समस्त देवता आराधित श्री सद्गुरु सन्निधौ, पञ्चसप्तति कुण्डात्मके, आविर्भाव पर्वदिने, प्रादुर्भव यज्ञ मण्डपे ।

भूमण्डल के दक्षिण में स्थित महाराष्ट्र प्रान्त में सह्याद्रि शिखरों के मध्य बहती पवना नदी के तटपर जो हिमगिरी आध्यात्मिक केन्द्र है जहाँ सभी देवता हमारे सद्गुरुजी की आराधना हेतु निवास करती हैं ऐसे परमपुण्य आश्रम में (७५ कुण्डों-वाले) आविर्भाव पर्व दिवस निमित्त आयोजित **प्रादुर्भाव यज्ञमण्डप** में (यज्ञ होगा)

श्री हेमलम्ब नाम संवत्सरे, दक्षिणायने, शरदृतौ, आश्विन मासे, शुक्लपक्षे, नवम्यां, शुक्रवासरे, पूर्वाषाढा नक्षत्रे, धनूराशि स्थिते चन्द्रे, कन्याराशि स्थिते सूर्ये, तुलाराशि स्थिते देवगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशि स्थानानि स्थितेषु सत्सु, शोभन योगे, बालव करणे, एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ,

श्री हेमलम्ब वर्ष के दक्षिणायन के शरद ऋतु में आश्विन मास के शुक्ल-पक्ष की नवमी तिथि पर शुक्रवार को पूर्वाषाढा नक्षत्र और धनु राशि में चन्द्र की स्थिति, कन्या में सूर्य एवं तुला में बृहस्पति की स्थिति में अन्य ग्रहों के यथा योग्य राशियों में होने पर, शोभन योग एवं बालव करण ऐसे अनेक गुणों से युक्त उत्तम सु-दिन-पर शुभ एवं पुण्यप्रद तिथि पर (यज्ञ होगा)

अस्माकं सर्वेषां पत्नी पुत्र कन्यादि समेतानां क्षेम स्थैर्य धैर्य वीर्य विजय दीर्घायुष्य उत्तम आरोग्य अष्टैश्वर्य समृद्ध्यर्थं श्री सद्गुरु पादारविन्दयोः अचञ्चल भक्ति सिद्ध्यर्थं ज्ञान वैराग्य प्राप्ति द्वारा गुरु तत्त्व प्रकाशार्थं श्री सद्गुरु सम्पूर्ण कृपा कटाक्ष अनुग्रहेण दयाक्षमाशान्त्यादि दैवी सद्गुणानां अभिवृद्ध्यर्थं आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक सकल ताप शोक दुःख निवारण द्वारा धर्मार्थकाममोक्ष पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं,

पत्नी-पुत्र-कन्या आदि स्वजनों सहित हम सभी को सुरक्षा, स्थिरता, धैर्य, पराक्रम, विजय, लम्बी आयु, अच्छा आरोग्य, आठों प्रकार की समृद्धियां प्राप्त हो, हमे अपने सद्गुरु देव के चरणों में अधिक प्रेम भक्ति हो, गुरुदेव की प्रसन्नता से ज्ञान और वैराग्य का लाभ हो, एवं गुरु तत्त्वका प्रबोध हो, जिस से हमारे जीवन में दया, क्षमा, शान्ति, उदारता, पर-उपकार, करुणा, मैत्री, सहिष्णुता, सरलता, सेवा का भाव आदि उत्तम सद्गुणों की प्राप्ती तथा अभिवृद्धि हो, वैसे ही आधि-दैविक, आधि-भौतिक एवं आध्यात्मिक इन तीनों से होने वाले सभी प्रकार के ताप, शोक, कष्ट, दुःख दूर हो जावे नष्ट हो जावे और हमारे जीवन में चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) बने जिस से की मानव जीवन परिपूर्ण और कृतकृत्य होता है और अन्त में हम अपने सद्गुरुदेव के अच्छे अंश बनते हैं ।

यथा शक्ति यथा मति साङ्गोपाङ्गेन आचार्यादि ब्राह्मण मुखेन प्रादुर्भाव यज्ञेन श्री सद्गुरु समाराधन महोत्सवं करिष्ये । तेन सद्गुरुं प्रीणयानि ।

अपनी स्मपूर्ण शक्ति और ज्ञान से हम छोटे से छोटे और बडे से बेडे सेवा कार्यों से इस यज्ञ का वेदपाठी आचार्य एवं ब्राह्मणों की साक्षी में और मार्गदर्शन से अपने सद्गुरुदेव की समाराधनामहोत्सव रूपी प्रादुर्भाव यज्ञ कर रहे हैं । इस प्रादुर्भाव यज्ञ से सद्गुरुदेव अवश्य प्रसन्न होंगे ।

-: रक्षा सूत्र धारणम् :-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

-: रक्षासूत्रबन्धनम् :-

भगवान् वामन जी त्रिविक्रम बन महाबली दानवराज बली की जिस सूत्र से रक्षा करते है, उसी रक्षा सूत्र को बांधकर आप सभी को सुरक्षित करते है । हे रक्षासूत्र यही स्थिर रहो मत चलो यहाँ से कही मत जाओ ।

–: अग्नि ध्यानम् :–

मेषारूढं जटाबद्धं गौरवर्णं महौजसम्
धूम्रध्वजं लोहिताक्षं सप्तार्चिः सर्वकामदम् ।
आत्माभिमुखमासीनं एवं ध्यायेत् हुताशनम् ॥

–: अग्निध्यानम् :–

गौरवर्ण से महातेज से सुप्रसन्न, जटाजूट बंधे हुये बकरे पर सवार अग्नि-भगवान् जी का हम ध्यान करते हैं । जिन की ध्वजा ही धुआँ है । लाल आँखों वाले अग्नि-भगवान् की सात प्रकार की ज्वालायें हम भक्तों के सब काम पूरण करती है । वे अग्नि-भगवान् हमारे सम्मुख सुखासीन हैं । ऐसे दीन-दयालु अग्नि-भगवान् को हमारा प्रणाम है । हे अग्नि-भगवन् इस प्रादुर्भाव यज्ञ में हम सब श्रद्धा और प्रेम से आप श्री का स्वागत करते हैं ।

अग्नि पूजनम् :-

१. अग्नये नमः ।

२. हुतवहाय नमः ।

३. कृष्णवर्त्मने नमः ।

४. देवमुखाय नमः ।

५. सप्तजिह्वाय नमः ।

६. बलवर्धनाय नमः ।

७. वैश्वानराय नमः ।

८. जातवेदसे नमः ।

मध्ये यज्ञपुरुषाय नमः ।

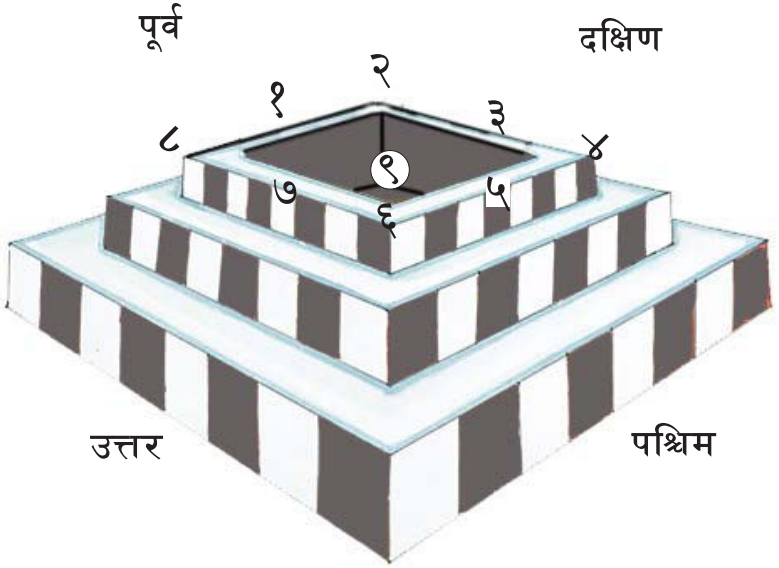

-: आदौ गणपति होमः :-

ह्रीं गं गणपतये नमः स्वाहा ।

इदं गणपतये न मम ।

गणपति, पच्चीस तत्त्व, शिव, शक्ति, हनुमान् एवं गुरु इन सभी के मंत्रों से हवन (अग्नि में आहुति देना)।

शक्ति बुद्धि और सिद्धि इन की प्राप्ति एवं विघ्नों का नाश हेतु गणेश भगवान् जी को आहुतियाँ देते हैं ।

तत्त्व मन्त्र होमाः :-

१. ह्रीं नमो भगवत्यै वसुन्धरायै स्वाहा ।
इदं भूम्यै न मम ।

२. ह्रीं नमो भगवते अपां पतये वरुणाय स्वाहा ।
इदं वरुणाय न मम ।

३. ह्रीं नमो भगवते जातवेदसे स्वाहा ।
इदं अग्नये न मम ।

४. ह्रीं नमो भगवते मातरिश्वने स्वाहा ।
इदं वायवे न मम ।

१. सभी का आश्रय, अन्न, वस्त्र और खनिजों को देने वाली, घुटनों से पैरों तक शरीर की देवता भूमि को आहुतियाँ देते हैं ।

२. शीतलता, मधुर आदि रस एवं जीवनानन्द देते हुए कमर से घुटनों तक शरीर की देवता जल को आहुतियाँ देते हैं ।

३. आकाश में सूर्य चन्द्र तारे बनकर, बादलों में बिजली बनकर, खनिजों में सोना बनकर, पेट में जठराग्नि बनकर जो सभी को उष्णता देते है और पचन करते है, ऐसे शरीर के मध्य भाग की देवता अग्नि-भगवान् को आहुतियाँ देते हैं ।

४. प्राण-अपान आदि कार्यों से १० प्रकार के कार्य करते हुए शरीर जीवित रखने में जो मुख्य है, सारे शरीर में होते हुए मुख्यतः छाती में रहने वाले जो असङ्ख्य कार्य करते है, ऐसे अतिबलशाली वायुदेवता को आहुतियाँ देते हैं ।

५. ह्रीं नमो भगवते अन्तरिक्षाय स्वाहा ।
इदं आकाशाय न मम ।

६. ह्रीं नमो भगवते गन्ध तत्वाय स्वाहा ।
इदं गन्ध तत्वाय न मम ।

७. ह्रीं नमो भगवते रस तत्वाय स्वाहा ।
इदं रस तत्वाय न मम ।

५. सारे विश्व ब्रह्माण्ड को और पूरी चर अचर सृष्टि को हर समय जो समान अवकाश देते है, शरीर के मस्तक भाग में रहकर जो शब्द के आधार है, जो निर्गुण निराकार परब्रह्म की जो निकटतम है, ऐसे आकाश देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

६. सभी के नासिका में जो घ्राणेन्द्रिय बन पृथ्वी के मुख्य गुण गन्ध तत्त्व है, उस की शुद्धि एवं सहिष्णुता गुण की वृद्धि के लिये गन्ध तत्त्व देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

७. सभी के जीभ पर रसनेन्द्रिय बन मधुर आदि छः रसों का ज्ञान कराता है, ऐसे जल के मुख्य गुण रसतत्त्व की निर्मलता, यश एवं आरोग्य प्राप्ति के लिये रसतत्त्व देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

८. ह्रीं नमो भगवते रूप तत्वाय स्वाहा ।
इदं रूप तत्वाय न मम ।

९. ह्रीं नमो भगवते स्पर्श तत्वाय स्वाहा ।
इदं स्पर्श तत्वाय न मम ।

१०. ह्रीं नमो भगवते शब्द तत्वाय स्वाहा ।
इदं शब्द तत्वाय न मम ।

८. सभी के नेत्रों में चक्षुरिन्द्रिय बनकर लाल, नीला, पीला आदि अग्नि के प्रधान गुण रूप तत्त्व की पवित्रता, निर्मोह स्थिति एवं वैराग्य की वृद्धि हेतु रूपतत्त्व देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

९. सभी के शरीर की पूरी त्वचा में त्वगिन्द्रिय बनकर विद्यमान, वायु के मुख्य गुण स्पर्श तत्त्व की पवित्रता हो, संसार से अ-लगाव होते हुए ऊपर उठने हेतु स्पर्शतत्त्व को आहुतियाँ देते हैं ।

१०. सभी के कानों के छिद्रों में श्रोत्रेन्द्रिय बन आकाश के मुख्य गुण शब्द तत्त्व का ठीक ठीक बोध हो एवं गुरु सेवासे ज्ञान बढने के लिये शब्द तत्त्व देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

११. ह्रीं नमो भगवते क्रोधघ्नाय स्वाहा ।
इदं क्रोधघ्नाय न मम ।

१२. ह्रीं क्लीं कामदेवाय स्वाहा ।
इदं कामाय न मम ।

१३. ह्रीं नमो भगवते सर्वमोहनाय स्वाहा ।
इदं सर्वमोहनाय न मम ।

११. मानव के घोरशत्रु क्रोध पर विजय पाने हेतु, क्रोध के संहारक परम शान्त भगवान को आहुतियाँ देते हैं।

१२. अपने जीवन में सुख शान्ति की प्राप्ति सभी के साथ धर्म से ही निश्चित है । अतः धर्म मार्ग पर चलने के लिये और प्रकट इच्छाशक्ति बढने हेतु भगवान् कामदेव को आहुतियाँ देते हैं ।

१३. विनाशी स्वभाव वाले संसार का व्यामोह छुटे और नित्य सनातन भगवान् के परम-मङ्गल दिव्य श्री विग्रह के दर्शन से सम्मोहित हो जावे उसलिये सर्वमोहन भगवान् को आहुतियाँ देते हैं ।

१४. ह्रीं नमो भगवते अहंकार तत्वाय स्वाहा ।
इदं अहंकार तत्वाय न मम ।

१५. ह्रीं नमो भगवते लोभ नाशनाय स्वाहा ।
इदं लोभ नाशनाय न मम ।

१६. ह्रीं मन आत्मने स्वाहा ।
इदं मनसे न मम ।

१४. अपने में विद्यमान अच्छाईयों से मद-गर्व, अभिमान और दूसरों के अच्छाईयों से मत्सर, द्वेष, घृणा ये दोनों भी मनुष्य को जड-अन्ध-पंगु बनाकर गिराते हैं। उस से बचने के लिये और आत्माभिमान से उन्नत जीवन सिद्ध हो इसलिये अहंकार तत्त्व की देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

१५. पतन और नरक के द्वार लोभ के नाश हेतु और निम्न स्तर के जीवन से उठने के लिये लोभनाश की देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

१६. बन्ध और मोक्ष दोनों के मुख्य कारण और सभी ज्ञान इन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियों के स्वामी सङ्कल्प-विकल्प से भटकाने वाले ऐसे मन पर नियंत्रण या निर्मना बनने हेतु मन की देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

१७. ह्रीं बुद्ध्यात्मने स्वाहा ।
इदं बुद्धये न मम ।

१८. ह्रीं नमो भगवत्यै सर्वचैतन्यरूपायै स्वाहा ।
इदं चैतन्यायै न मम ।

१९. ह्रीं अहंकारात्मने स्वाहा ।
इदं अहंकाराय न मम ।

१७. सभी ज्ञान एवं कर्म, उन्नती और पुरुषार्थ आदि सभी सिद्धियों की जननी भगवान् की दिव्यशक्ति, बुद्धि की निर्मलता एवं सत्प्रेरणा हेतु बुद्धि देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

१८. नख शिखान्त सम्पूर्ण शरीर को संवेदना से ओत-प्रोत कर जीवनपर्यन्त सभी अवस्थाओं में छाया जैसे साथ रहने वाली चैतन्य शक्ति की देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

१९. शरीर की सभी इन्द्रियाँ उन की देवताएँ प्राण-मन-बुद्धि आदि शरीर के सारे अङ्ग जिन की सेवा में रहते हैं जो गुरु परमात्मा का अंश है, ऐसे जीवात्मा की (जो की सोने के पिंजडे में फसे हुए राजकुमार जैसे) मुक्ती होने के लिये उस के देवता को आहुतियाँ देते हैं ।

२०. ह्रीं नमो भगवते शिवसङ्कल्पदाय स्वाहा ।
इदं सङ्कल्पाय न मम ।

२१. ह्रीं नमो भगवते सत्यपराय स्वाहा ।
इदं सत्याय न मम ।

२२. ह्रीं नमो भगवते प्रेममूर्तये स्वाहा ।
इदं प्रेम्णे न मम ।

२०. जिस से प्राणिमात्र का अत्यन्त मंगल हो, सभी जीव आगे बढे, ऊपर चढे इस प्रकार के शुभ सङ्कल्प को जगाने वाले बल, प्रेरणा एवं अवसर देने वाले कल्याणकारी भगवान को आहुतियाँ देते हैं ।

२१. जो भगवान् का स्वरूप है, जो सृष्टि का आधार है, प्राणिमात्र का जो सहज स्वभाव है, जो एक मात्र आदि मध्य और अन्त में समान है, ऐसे सत्य की प्राप्ति हेतु सत्यस्वरूप भगवान् को आहुतियाँ देते हैं।

२२. स्वयं निरपेक्ष हो कर सर्वत्र सुन्दरता और अच्छाई देखे, और दूसरे के सुख में सुख माने त्याग की सर्वोन्नत स्थिति जिस की देन है, ऐसे भगवत्, आत्म, गुरु स्वरूप प्रेम की उपलब्धि हेतु प्रेममूर्ति भगवान् को आहुतियाँ देते हैं ।

२३. ह्रीं नमो भगवते दयागुणाय स्वाहा ।
इदं दयागुणाय न मम ।

२४. ह्रीं नमो भगवते सर्वज्ञ सर्व शक्तिमते स्वाहा ।
इदं सर्वज्ञाय न मम ।

२३. जो विश्व का सर्व श्रेष्ठ और सर्वोन्नत धर्म है, परदुःख से जो द्रवित कराता है, जिसके होनेपर सारा जगत मित्र बनता है, ऐसे दयारूपी धन की प्राप्ति हेतु दयाघन भगवान् को आहुतियाँ देते हैं ।

२४. ऐश्वर्य-धर्म-कीर्ति-सम्पत्-ज्ञान और वैराग्य पूर्ण रूपेण जिन में स्थिर है, जो पिपीलिकादि ब्रह्मपर्यन्त सभी के जीवन को भूत-भविष्य-वर्तमान में सम्पूर्ण जानते है, जो सर्व शक्तियों के पूर्ण निधि है, ऐसे शिव के अनुग्रह से गुरुतत्त्व-दर्शन हेतु उन्ही परम शिव भगवान् को आहुतियाँ देते हैं ।

२५. ह्रीं सर्वचैतन्यरूपां तां आद्यां विद्यां च धीमहि ।
बुद्धिं या नः प्रचोदयात् स्वाहा ॥
इदं भगवत्यै न मम ।

२६. ह्रीं नमो भगवते वायुपुत्राय अतिबलशालिने ।
रामदूताय सेवाधुरन्धराय आञ्जनेयाय स्वाहा ॥
इदं मारुतये न मम ।

२५. अणु-रेणु में व्याप्त चैतन्य ही जिनका स्वरूप है, जो आदि-मध्य-अन्त रहित है, परा विद्या और अपरा विद्या की देवता है, ऐसी शक्ति माँ जिन की प्रेरणा से ही अबोध शिशु से लेकर वैज्ञानिक, गुरु, आचार्य, महर्षि, देवता सभी अपने अपने कायों में सशक्त होते है, और प्रेरित भी होते है, उन पराम्बा भगवती की प्रसन्नता हेतु उन्ही को आहुतियाँ देते हैं ।

२६. शिवावतार, वायुपुत्र, अतिबलशाली, सेवाधुरन्धर, निर्मोह, अनासक्त, दास्य भक्ति के परमोत्कर्ष, सर्वांग सौन्दर्य दिव्य मङ्गल विग्रह, अञ्जनीकुमार, चिरञ्जीवी, समुद्रोल्लङ्घन, लङ्का दहनादि अतिलौकिक कार्यों को लीलया करने वाले, परम सरल, विनम्रता के सर्वोच्च आदर्श, प्रभु श्रीराम के दूत, वानरराज सुग्रीव के महामन्त्री, भगवान् मारुती जी की प्रसन्नता से हम सरल, विनम्र और सेवातत्पर बने इसलिये उनको आहुतियाँ देते हैं ।

२७. ह्रीं दत्तात्रेयाय विद्महे । योगिराजाय धीमहि तन्नो दत्तः प्रचोदयात् स्वाहा ॥
इदं सद्गुरवे न मम । (१०८ वारम्)

२७. देव, दानव, ऋषि, मुनि, योगी, सन्त, वैज्ञानिक, गायक, कलाकार, सभी को सन्मार्ग बोध कराते हुए, जगत् और जगदीश का बोध कराते हुए शिष्य को स्वरूप दिखलावे और उंगलिया पकडकर उसको ऊपर ले जाते हे । शिष्य के यश-धर्म-सुख-पुण्य को बढा देते है, सर्वत्र सर्वदा अनेकों रूपों में उपस्थित होते है, अन्ततः शिष्य के अज्ञान को मिटाकर उसको ही अपने जैसे सद्गुरु बना देते है, ऐसे सद्गुरुपरम्परा के जो आद्य गुरु है, ब्रह्म विष्णु महेश जिन की तीन मूर्तियाँ है, ऐसे साक्षात् परब्रह्म स्वरूप, भगवती देवी अनसूया एवं अत्रि नन्दन भगवान् दत्तात्रेय जी से दया की याचना करते हुए उन्ही को आहुतियाँ देते हैं ।

प्रायश्चित्त होमः

उत्तराङ्गम् (अनुग्रह भाषण प्रवचन)

पूर्णाहुति वसोर्धारा होमः

गुरु आरति पुष्पाञ्जलि

नमोः नमोः नमोः गुरू नमोः गुरू कारिए, जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए (२)

मन में हो गुरू - मंत्र गुरू सेवा हाथ में, (२)

तू अकेला नहिं प्यारे गुरू तेरे साथ में, विधि का विधान जान हानि - लाभ सहिए,

जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

नमोः नमोः नमोः गुरू नमोः गुरू कारिए, जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पाएगा, (२)

होगा प्यारे वही जो गुरू मन आएगा, फल आशा छोड़ शुभ कर्म करते रहिये,

जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

नमोः नमोः नमोः गुरू नमोः गुरू कारिए, जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

जिंदगी की डोर सौंप गिरि चरणों में,(२)

भ्रम में राखे चाहे पार उतार दे, दिन - रात - सांस - सांस सेवा में ही रमिए,

जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

नमोः नमोः नमोः गुरू नमोः गुरू कारिए, जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

नमस्ते गार्हपत्याय नमस्ते दक्षिणाग्नये
नम आहवनीयाय महावेद्यै नमो नमः ॥

काण्डद्वयोपपाद्याय कर्म-ब्रह्म-स्वरूपिणे ।
स्वर्गापवर्ग दात्रे च यज्ञेशाय नमो नमः ॥

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम् ।
आयुष्यं तेजः आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥

गार्हपत्य नाम के अग्नि को, दक्षिणाग्नि नाम के अग्नि को, आहवनीय नाम के अग्नि को एवं महावेदी को प्रणाम करते हैं ।

कर्म काण्ड और ज्ञान काण्ड दोनों में जिस को बताया है, कर्म और ब्रह्म जिस का स्वरूप है, स्वर्ग और मोक्ष जो देता है, ऐसे यज्ञ नारायण को नमस्कार ।

हे यज्ञ भगवान् मुझे श्रद्धा, धारणा शक्ति, कीर्ति, ग्रहण शक्ति, विद्या, बुद्धि, सम्पत्ति, तन की शक्ति, लमबी आयु, कान्ति और आरोग्य प्रदान करो ।

शरीर से वाणि से मन से इन्द्रियों से, बुद्धि से, आत्मा से, प्रकृति से और स्वभाव से जो जो मै कर रहा हूँ वह सब कुछ पूरा का पूरा सर्व श्रेष्ठ नारायण को समर्पित करता हूँ ।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

श्री सद्गुरु चरणारविन्दार्पणमस्तु

अज्ञान रूपी अन्धेरे से अन्धे बने हुए मेरे आंखों में ज्ञान रूपी अञ्जन लगाकर जिन्हों ने मेरी आंखे खोली और मुझे सब कुछ ठीक ठीक दिखाया ऐसे गुरु को मेरा प्रणाम ।

गुरू ही ब्रह्मा है, गुरू ही विष्णु है, गुरू ही महादेव शिव है, गुरू ही साक्षात परब्रह्म है ऐसे गुरूजी की चरणों में मेरा प्रणाम है ।

प्रस्थान

गुरु आरति पुष्पाञ्जलि

नमोः नमोः नमोः गुरू नमोः गुरू कारिए, जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए (२)

मन में हो गुरू - मंत्र गुरू सेवा हाथ में, (२)

तू अकेला नहिं प्यारे गुरू तेरे साथ में, विधि का विधान जान हानि - लाभ सहिए,

जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

नमोः नमोः नमोः गुरू नमोः गुरू कारिए, जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पाएगा, (२)

होगा प्यारे वही जो गुरू मन आएगा, फल आशा छोड़ शुभ कर्म करते रहिये,

जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

नमोः नमोः नमोः गुरू नमोः गुरू कारिए, जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

जिंदगी की डोर सौंप गिरि चरणों में,(२)

भ्रम में राखे चाहे पार उतार दे, दिन - रात - सांस - सांस सेवा में ही रमिए,

जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

नमोः नमोः नमोः गुरू नमोः गुरू कारिए, जाहि विधि राखे गुरू ताहि विधि रहिए

मंत्र सार

1. प्रकृति, शरीर, मन, आत्मा और गुरू का प्रतिनिधित्व करने वाले सभी अवयवों और तत्वों के प्रति हम अपना आभार और कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

2. हम इन सभी तत्वों से निश्चल और शांतचित्त रहने की प्रार्थना करते हैं।

3. हम इन सभी तत्वों के अंतर्ग्रहण का आह्वान करते हैं और हमारे अस्तित्व का हिस्सा बने रहने की विनती करते हैं।

4. हम विनती करते हैं कि हमें इन तत्वों को ग्रहण और धारण करने की शक्ति प्राप्त हो।

5. हम इन तत्वों के श्रेष्ठ गुणों का प्रसार करने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम होने की प्रार्थना करते हैं।

ॐ नमोः गुरुदेव

परम पुज्य
गुरूजी

परम पुज्य
माताजी

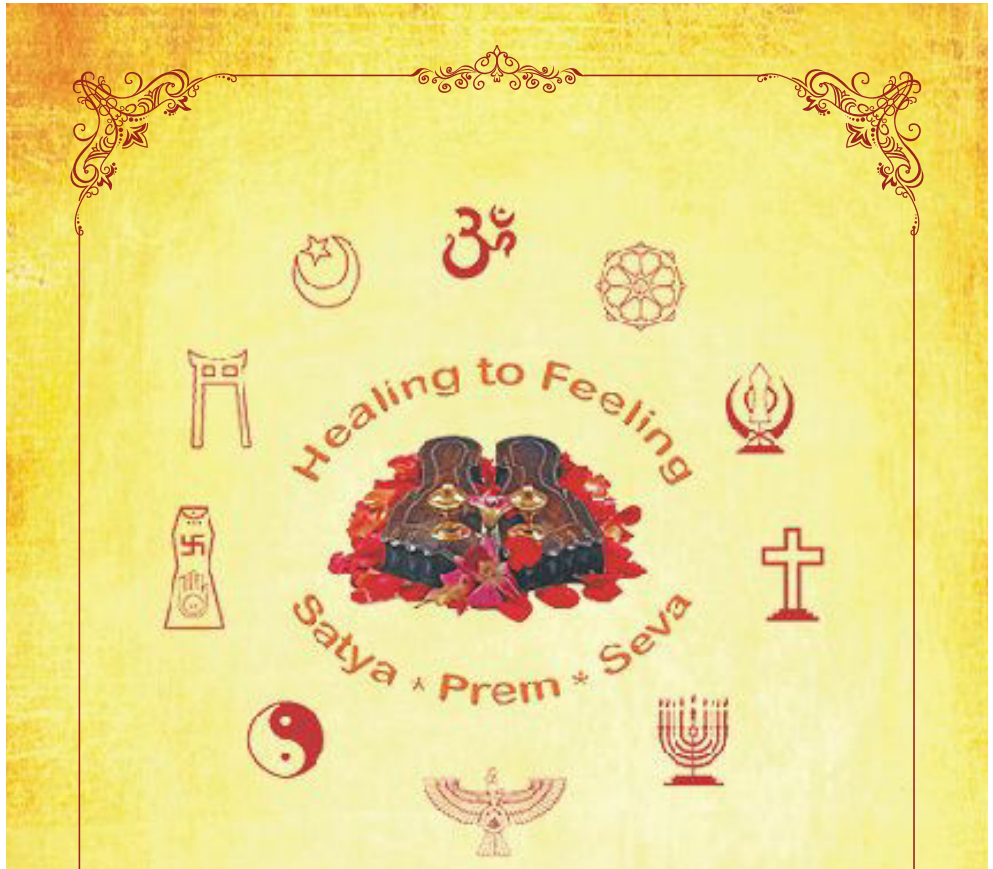

Himgiri Spiritual Research & Training Centre

Gurudham, Near Pavna Dam, Tal: Maval, Dist: Pune-410401

www.himgirispiritual.org